UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : Sanskrit Literature
Research Link - 163, Vol - XVI (8), October - 2017, Page No. 139-140
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

'दूतप्रतिवचनम्' में पर्यावरण संरक्षण के उपाय

प्रस्तुत शोधपत्र में 'दूतप्रतिवचनम्' में पर्यावरण संरक्षण के उपायों पर चर्चा की गई है। 'दूतप्रतिवचनम्' में कवि डॉ.इच्छाराम द्विवेदीजी ने पर्यावरण संरक्षण के बारे में कहा है कि पर्वत, नदियाँ सभी प्रदूषण और अतिक्रमण की भेंट चढ़ चुके हैं। साथ ही नगरों और ग्रामों में सामाजिक, सांस्कृतिक क्षय के साथ-साथ मूल्यों में भी जबरदस्त गिरावट आ रही है। आज समाज में फैल रही, पारिवारिक समस्याओं एवं सामाजिक बदलाव पर करारा कटाक्ष है तथा आधुनिकता के इस दौर में संस्कृति का ह्रास हुआ है, उकस काला चिट्ठा इस काव्य में प्रस्तुत किया गया है। भारत देश में फैल रहे धार्मिकता के नाम पर हो रहा छलावा एवं धार्मिक स्थानों की दुर्दशा का चित्रण कवि सरलता से समाज के सामने रखने में पूर्णतः सफल हुए हैं।

संतोष कुमार अहिरवार* एवं डॉ.एस.एस.गौतम**

आदिकाल से लेकर वर्तमान आधुनिक युग तक की मानव विकास की यात्रा से ज्ञात होता है, कि मानव ने पर्याप्त विकास किया है, उसने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नित नूतन अविष्कारों को जन्म दिया है। यह विकास यात्रा उसने पर्यावरण का गला घोंट कर प्राप्त किया है, उसने मन माने ढंग से प्राकृतिक संरचना को विकृत किया है। मानव विकास की यात्रा समष्टि से व्यष्टि की ओर हुई है। इसमें मानवता अपना अस्तित्व खोती गई और दुराचार, भ्रष्टाचार और प्रदूषण सर्वोपरी होता गया, वही वैदिक से लेकर कालिदास जी के समय तक मानव विकास सबको हित में रखकर किया जाता था, जो इसके बाद भक्तिवाद होता चला गया। पर्यावरण का स्वरूप तो मुख्य रूप से भौतिक संसाधनो ने ही बिगाड़ा है। इसका परिणाम हमारे सामने है। इन्ही परिणामों को ध्यान मे रखकर डॉ.इच्छाराम द्विवेदी जी ने अपने गीति काव्य में 'दूतप्रतिवचनम्' की रचना की है और समाज को नया संदेश दिया है कि यदि कभी भी इसे नही छोड़ा गया या संभाला गया तो प्राकृतिक प्रकोप हमारे सामने होगें, इन्हीं पर्यावरण प्रकोपों की एक छवि समाज के सामने रखने मे सफल भी हुए हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में दूतप्रतिवचनम्' काव्य में पर्यावरण संरक्षण के उपायों को वर्णित करने का प्रयास किया हैं।

कहीं अतिवृष्टि कहीं अनावृष्टि, भूकम्प, सोनामी, बाढ़, भ्रष्टाचार, प्रदूषण, धार्मिक अवहेलना, दुराचार आदि परिणाम हमारे सामने हैं। इन त्रासदियों से मानव समाज अकाल काल कल्पित होने लगा है।

पर्यावरण की पवित्रता उसके सन्तुलन पर निर्भर है। इसके लिए मानव मन का पवित्र एवं दयालू होना परम आवश्यक है, वातावरण निश्चित ही विकृत होने लगेगा यदि गहराई से विचार करें, तो पर्यावरण में ही सम्पूर्ण सृष्टि ही अन्तर्निहित दिखाई देती है।

रेवा नदी व विन्ध्यांचल पर्वत अपनी दुर्दशा पर रो रहे हैं। यह उसकी सुन्दरता तो नष्ट हुई ही है, साथ ही वह भी नष्ट होने के कगार पर है।

रेवा खिन्ना प्रतिदिनमहो बन्धकृभ्भिर्विबद्धा,
ठेकेदारैः परमनुदिनं छिद्यते काननं तत्।
सीमेण्टार्थं कणरिचने यन्त्रशालासऽसुरीभिः,
तुग्गो विन्ध्यो व्यक्तिहृदयश्चूर्ण्यते पिष्यते च।। (1)

अहो प्रतिदिन बाँध लगाने वाले पुरूषों के द्वारा बाँध लगाई गई रेवा नदी धीमे–धीमे बहती उदास सी दिखलाती पड़ती है। इतना ही नहीं ठेकेदारों के द्वारा प्रतिदिन यहाँ का घना वन काटा जा रहा है। यहाँ राक्षसी जैसी विशाल आकार की फैक्टरियों के द्वारा सीमेण्ट के लिए पत्थर का कण बनाने के कार्य में ऊँचा एवं गौरवशाली विन्ध्य पर्वत चूर–चूर करके पीसा जा रहा है। इस दुष्कृत्य से इस पर्वत का हृदय अत्यन्त पीड़ित हो रहा है।

समाज में फैली हुई विकृतियों को दिखाते हुए कवि कहता है कि गर्भाधान नष्ट किया जा रहा है, उसका संरक्षण करना चाहिए।

गर्भाधानक्षण परिचये भारतीय रमण्यः
शीघ्रं गत्वा जठरमरदं शैशवं घातयन्ति।
ग्रामे –ग्रामे स्थिति मुपगता सार्वकारी व्यवस्था,
यस्याः हेतोः सरलमवदगर्भ नाशस्य कृत्यम्।। (2)

अब भारत की स्त्रियों को जैसे ही अपनी गर्भ स्थिति का बोध होता है, वे तुरंत ही नष्ट कर देती है अथवा गर्भ स्थिति का बोध होते ही अस्पताल जाकर वे उसे हटवा देती है। नगर की तो बात ही क्या अब तो गाँव – गाँव में इसके लिए सरकार की ओर से पक्की सड़क व्यवस्था कर दी गई है। इसके अब गर्भ विनाश का कृत्य सरल हो जाता है।

आज उज्जयिनी नगरी की सड़कें व वातावरण खतरे में यहाँ का वातावरण किस तरह से बिगड़ा हुआ है। कवि कहता है :

**शोधार्थी, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, सतना (मध्यप्रदेश)*
***प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (संस्कृत विभाग), शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया (मध्यप्रदेश)*

भग्ना मार्गा मलिलमलिना पंकिलाः पूतिवातः।
दृश्यन्ते च घृणिततनवः शूकरा वीथिकासु।
शिप्रा जाता विगतजलजा दूषितापेयनीरा,
तस्या वातः प्रियतम इवाभाति नौऽवन्तिकायाम ।। (3)

आज की उज्जयिनी नगरी में सड़कें मरम्मत न होने के कारण टूटी–फूटी नियमित झाड़ू न लगने के कारण बहुत गन्दी नालियों के रूक जाने के कारण दुर्गन्ध से परिपूर्ण हैं। यहाँ की गलियों में विष्ट और कीचड़ में सने हुए घिनौने शरीर वाले सुअर बेरोकटोक घूमते दिखाई पड़ते है। यहाँ शिप्रा नदी में कमल भी नहीं रहे तथा उसका जल भी दूषित होने से पेय नहीं रहा। सवेरे शीतलता और सुगन्ध के अभाव में शिप्रा का वायु भी अब प्रियतम सा नहीं प्रतीत होता।

पंजाब राज्य पाँच नदियों से पवित्र हुआ देश का क्षेत्र है और आज भी सुखी राज्य है, पर वहाँ भी सुख नहीं रहा।

यस्मिन्देशे परमसुखदे पन्चवारां पवित्रे,
ऋद्ध्या सिद्ध्या प्रचुरविभवैर्ये जनाः प्रागनन्दन्।
बला वृद्धा युवतियुवका हृष्टपुष्टा बलाद्या,
हन्यन्ते ते प्रतिदिनमहो तत्र हातंकवादैः।। (4)

अहो पाँच नदियों के जलों से पवित्र अपनी शस्त्र सम्पदा के कारण अत्यन्त सुखदायी जिस पंजाब देश राज्य में पहिले जो लोग ऋद्धि, सिद्धि एवं विविध सम्पदाओं से युक्त होकर आनन्दित रहा करते थे, दुःख है, अब वहीं वे हृष्ट, पुष्ट एवम् बलवान् युवक युवतियाँ आंतकवादियों के द्वारा निर्दयतापूर्वक मारे जा रहे हैं।

वे वैश्याएँ पुलिस के भय से इस स्थान को छोड़कर दूर चली गई है। समाज में चोरी–डकैती का प्रचलन आम हो गया है, घूसखोरी मिलावटखोरी जोरों पर चल रही है, आज हमारे समाज में बुराइयों का एक बड़ा ठिकाना बन गया है।

चौरा जात नगरधनिकास्तस्करा नेतृभूता,
वेश्या यास्ता दलितदयिताः शिक्षकास्तेऽपि मूढ़ाः।
सन्तः सर्वे विलयमधुना हा प्रयाताः कुतश्चिद्र,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चकनेमिक्रमेण ।। (5)

जो पहले चोर थे, अब वे नगर सेठ हो गए हैं। जो वेश्याएँ हैं, वे अब अपने प्रेमियों को पीड़ा पहुचा रही हैं। जो शिक्षक हैं, वे स्वयं अज्ञानी हैं। दुःख की बात है कि इस युग मे सभी सत्पुरूष न जाने कहाँ खो गए हैं। सच है काल की स्थिति पहिये की धुरी की भाँति कभी ऊपर तो कभी नीचे होती रहती है।

कृषक भी आधुनिक मशीनों का प्रयोग करने लगे हैं, भारतीय संस्कृति का मूलाधार संगीत भी अवनति की ओर बढ़ा रहा है, जिससे ध्वनि प्रदूषण हो रहा है इसका संरक्षण करना चाहिए।

द्वित्रा द्वष्टा वृषभसहिताः कर्षकाः सीरलग्नाः,
प्रायोऽभुवन् कृषिविरचने यन्त्रगोदारणानि।
दोलागीतं सरसमधुरं श्रुयते नाद्य देशे,
श्रूयेतेदं यदि तदधुनाऽकाशवाणी कृपातः ।। (6)

अपने बैलों को साथ ले दो–तीन कृषक ही हल से जुताई करने में लगे हुए थे, प्रायः खेती बाड़ी के कार्य मे अब यांत्रिक हलों ट्रेक्टरों का उपयोग होने लगा है। अब पहले की भाँति रसीले और मीठे नारी स्वरों में हिंडोले गीत कहीं भी तो सुनाई नहीं पड़ते।अब ये यदि कभी सुनाई पड़ते भी हैं, तो आकाशवाणी की कृपा से ही ऐसा संभव हो पाता है।

राष्ट्रीय दुर्दशा को देखते हुए उन्होंने लगभग प्रत्येक श्लोक में इसकी चिंता व्यक्त की है। इससे अलग वह देश के नगरों का वर्णन करते हुए वह कहते हैं–

तीर्थं जां भृशमशुचि हा ! श्रीहरिद्वारसंज्ञं,
मध्येगङ्गं क्षिपति मलिनं यन्त्रशालाजलं तत्।
रात्र्यावासोऽभवद्सुलभे होटलैर्दीर्घशुल्कै–
र्मद्यं मांसं प्रकटमभितो दृश्यते पण्यवीथ्याम्।। (7)

दुःख है, हरिद्वार नामक शोभामय तीर्थ अब अत्यन्त अपपित्र हो गया है। वह मिलों और फैक्टरियों में मलिन जल को गंगा में निरन्तर गिराता रहता है। वहाँ महंगे किराये वाले होटलों के कारण रात्रि में ठहरना कठिन हो गया है तथा बाजारों में भी चारों ओर मद्य एवं मांस प्रकट में बिकता दिखलाई पड़ता है।

विद्यागेहे श्रमिक सर्वकारालयेऽपि,
यन्त्रागारे किमधिकमहो सर्वदिक्ष्वेव नित्यम्।
रम्या ह्रद्याः सरसमधुरा भारतीय रमण्यो,
दा शोष्यन्ते दितिजचरितैः कान्तिमत्यो वराक्यः।। (8)

विद्यालयों, फैक्ट्ररियों और मिलों में यहाँ तक कि सभी विभागों में दा! राक्षसी वृत्ति के अधिकारी पुरूषों के द्वारा नित्य ही सुन्दर, मनोहर, सरस मधुर वार्तालाप करने वाली कान्तिकारी बेचारी भारतीय कर्मचारी महिलाओं का शोषण किया जाता है।

मुञ्चन्ते हा सुभग! वर्षणाद् ये दिगन्ते,
केदारास्ते विविधमलिनैरूर्वरैर्नष्टगन्धा।
अन्नं सर्वं विरसमभवद् रोगसंवर्द्धकश्च,
तत्किं वच्मि प्रकटमधुना षड्सास्तेऽपि नष्टाः (9)

हे नेत्रानन्दकारी मित्र! वर्षा होने के कारण जो कभी दिशाओं में सुगन्ध बिखेरा करते थे, अब वे खेत प्रकार के मलिन उर्वरकों द्वारा अपनी सुगन्ध खो चुके हैं। सभी प्रकार का अन्न भी स्वादिरहित एवं रोगवृद्धिकारक हो गया है। क्या–क्या, साफ–साफ कहूँ अहा वे मधुर अम्ल आदि छह रस जो खाद्य वस्तुओ में हुआ करते थे, तब अब नष्ट हो चुके हैं।

निष्कर्ष :

'दूतप्रतिवचनम्' में कवि डॉ. इच्छाराम द्विवेदी जी ने पर्यावरण संरक्षण के उपाय पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला है, पर्वत, नदियाँ सभी प्रदूषण और अतिक्रमण की भेंट चढ़ चुकी हैं। साथ ही नगरों और ग्रामों में सामाजिक, सांस्कृतिक क्षय के साथ–साथ मूल्यों में भी जबरदस्त गिरावट आयी है। आज समाज में फैल रही, पारिवारिक समस्याओं एवं सामाजिक बदलाव पर करारा कटाक्ष है तथा आधुनिकता के इस दौर में संस्कृति का ह्रास हुआ है, उसका काला चिट्ठा इस काव्य में खोला गया है। भारत देश में फैल रहे धार्मिकता के नाम पर हो रहा छलाव एवं धार्मिक स्थानों की दुर्दशा का चित्रण कवि सरलता से समाज के सामने रखने में पूर्णतः सफल हुए हैं।

सन्दर्भ :

(1) द्विवेदी, डॉ.इच्छाराम : दूतप्रतिवचनम्–47. ***(2)*** *द्विवेदी, डॉ. इच्छाराम : दूतप्रतिवचनम् – 21.* ***(3)*** *द्विवेदी, डॉ.इच्छाराम : दूतप्रतिवचनम्–49.* ***(4)*** *द्विवेदी, डॉ.इच्छाराम : दूतप्रतिवचनम् – 35.* ***(5)*** *द्विवेदी, डॉ.इच्छाराम : दूतप्रतिवचनम्–34.* ***(6)*** *द्विवेदी, डॉ.इच्छाराम : दूतप्रतिवचनम्–44.* ***(7)*** *द्विवेदी, डॉ.इच्छाराम : दूतप्रतिवचनम्–11.* ***(8)*** *द्विवेदी, डॉ.इच्छाराम : दूतप्रतिवचनम्–27.* ***(9)*** *द्विवेदी, डॉ.इच्छाराम : दूतप्रतिवचनम्–39.*

❁ ❁